खोलना मत!

पैंडोरा के बक्से की कहानी

जोआन होलूब

चित्र: दानी जोन्स

एक यूनानी मिथक का पुनर्कथन

पैंडोरा को एक चमकदार सोने का डिब्बा मिलता है जिस पर एक नोट लिखा होता है: "खोलना मत!"

हालाँकि, वो उसे खोलने को इतनी उत्सुक है कि वो चेतावनी को अनदेखा कर देती है और डिब्बे को खोल देती है! उसके बाद दुनिया को परेशानी से भरने के लिए सैकड़ों कीड़े डिब्बे में से बाहर उड़कर निकलते हैं. पेंडोरा शुरू में बहुत भयानक महसूस करती है पर अंत में उसे डिब्बे कुछ अद्भुत मिलता है जो उसकी मदद कर सकती है: उम्मीद नाम की एक परी.

खोलना मत!

पैंडोरा के बक्से की कहानी

जोआन होलूब

चित्र: दानी जोन्स

बहुत पहले यूनानियों ने इस बात पर सोच-विचार किया कि उनके देवता कभी-कभी उनके साथ बुरा क्यों होने देते थे.

इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए उन्होंने यह कहानी लिखी.

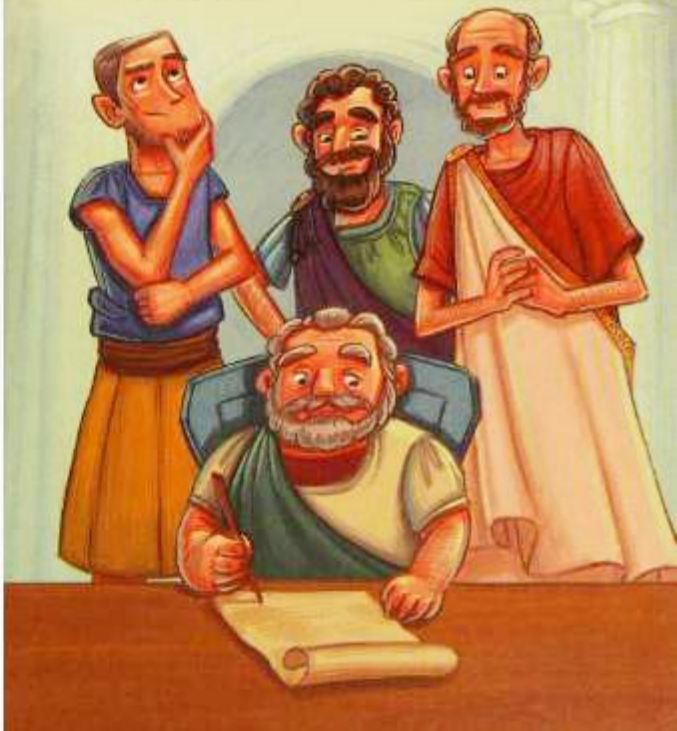

एक बार पैंडोरा नाम की एक महिला थी.

वो बहुत होशियार और मिलनसार थी.

वो बहुत उत्सुक भी थी.

पैंडोरा यूनान में अपने पति एपिमिथियस के साथ रहती थी.

वे बहुत खुश थे.

वैसे यूनान में बाकी लोग भी खुश थे.

यूनान में देवता, लोगों की देखभाल करते थे.

लेकिन लोग, देवताओं का आभार नहीं मानते थे.

इसलिए देवताओं ने लोगों को एक सबक सिखाने का फैसला किया.

इसलिए यूनानी देवताओं ने, पैंडोरा के घर एक बक्सा भेजा.

बक्सा सोने का बना था और चमकीला था.

"वो बक्सा किसने भेजा है?" एपिमिथियस ने पूछा.

"मुझे उसकी परवाह नहीं है?" पेंडोरा ने कहा.

"बस मुझे उपहार पसंद हैं!"

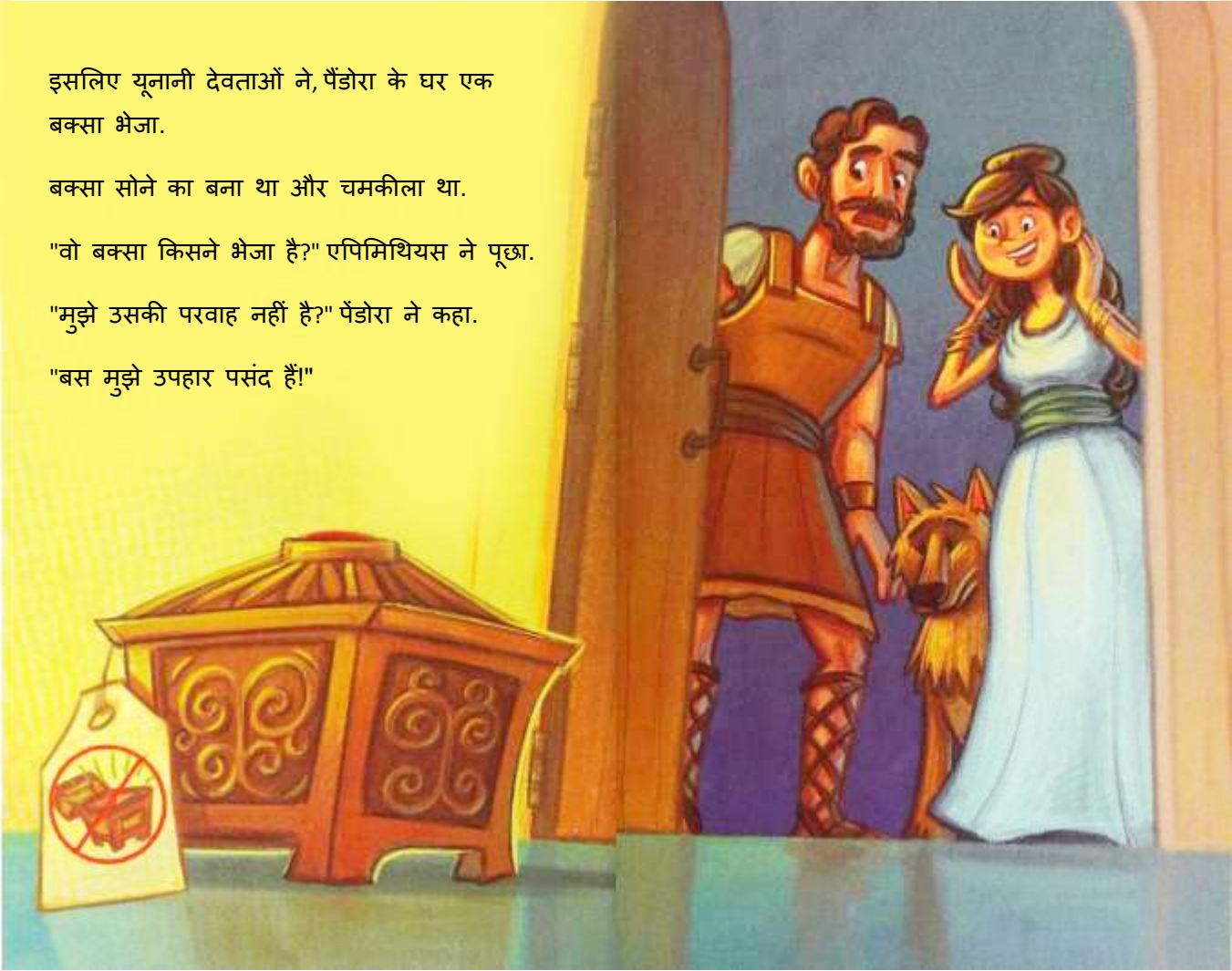

"चलो इसे खोलते हैं," पैंडोरा ने कहा.

"नहीं!" एपिमिथियस ने कहा.

"इस पर एक नोट लिखा है,

जो कहता है: 'खोलना मत!'"

"तुम उस बक्से के बारे में भूल जाओ,"

एपिमिथियस ने पेंडोरा को चेतावनी दी.

लेकिन पैंडोरा, उस बक्से को नहीं भूल सकी.

वो यह जानना चाहती थी कि उस बक्से के अंदर क्या था.

उसके अलावा वो और कुछ नहीं सोच सकती थी.

हो सकता है कि वो बक्सा मिठाइयों और कैंडी से भरा हो, पेंडोरा ने सोचा.

उसने बक्से के किनारों को सूँघा.

लेकिन उसे मिठाई की कोई खुशबू नहीं आई.

शायद बक्से में संगीत भरा हो,
पेंडोरा ने सोचा.

उसने बक्से को अपने कान से लगाया
और उसे सुनने की कोशिश की.

लेकिन उसे बक्से में से कोई संगीत
सुनाई नहीं दिया.

शायद वो बक्सा गहनों से भरा हो, पेंडोरा ने सोचा.
क्या पता वो हमें अमीर बना दे!
उसने अंदर झांकने की कोशिश की.
लेकिन वो अंदर नहीं देख पाई.

मैं बक्से को खोलूंगी पैंडोरा ने फैसला किया.

फिर मैं अंदर झाँक कर देखूँगी.

उसके बाद मैं बक्से को फिर से बंद कर दूंगी.

तब एपिमिथियस को उसका पता तक नहीं चलेगा.

पैंडोरा ने बक्से के ढक्कन को खींचा.

पर वो नहीं खुला.

उसने और जोर से खींचा.

फिर और दम लगाया.

अचानक बक्सा खुल पड़ा.

उसमें से सैकड़ों कीड़े बाहर निकले और उड़ने लगे!

उन्होंने पेंडोरा को डंक मारे.

"बचाओ! बचाओ!" वो चिल्लाई.

तभी एपिमिथियस भागा हुआ अंदर आया.

कीड़ों ने उसे भी डंक मारे.

"तुम हमें क्यों काट रहे हो?" एपिमिथियस ने उनसे पूछा.

"क्योंकि हम मुसीबत के कीड़े हैं!" उन्होंने कहा.

फिर मुसीबत के कीड़े बाहर उड़ गए.

वे जहां भी गए, उन्होंने लोगों के लिए परेशानियां खड़ी कीं.

लोग आपस में लड़ने लगे.

वे बीमार हो गए.

लोग दुखी हुए.

यहाँ तक की फूल भी मुरझा गए.

"देखो कि तुमने यह क्या किया!" एपिमिथियस ने पेंडोरा से कहा.

"मुझे खेद है," पेंडोरा ने कहा.

फिर पेंडोरा ने बक्सा बंद कर दिया.

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी.

दुनिया अब परेशानियों से भर चुकी थी.

"मुझे बाहर निकालो!" तभी अंदर से एक छोटी सी आवाज चिल्लाई.

"वो किसकी आवाज़ है?" एपिमिथियस ने पूछा.

"वो आवाज़ बक्से के अंदर से आई है," पेंडोरा ने कहा.

"लगता है उसके अंदर कुछ और है."

फिर पेंडोरा ने दुबारा से बक्सा खोला.

बक्से में से एक परी उड़कर बाहर निकली.

"तुम कौन हो?" पैंडोरा ने पूछा.

"मेरा नाम उम्मीद है," परी ने कहा.

"मैं मुसीबत में फंसे लोगों की मदद करती हूं."

उम्मीद ने पैंडोरा के ज़ख्मों को चूमा.

उसने एपिमिथियस के कीड़े काटे के ज़ख्मों को भी चूमा.

उससे दोनों को तुरंत बहुत आराम मिला!

"रुको!" पेंडोरा चिल्लाई. "अगर हमें फिर से तुम्हारी मदद की ज़रूरत पड़ी तो फिर हम क्या करेंगे?"

उम्मीद ने वादा किया, "आपको जब कभी मेरी जरूरत पड़ेगी, मैं हमेशा वापस आऊंगी."

"अब मुझे अलविदा कहना चाहिए," उम्मीद ने कहा.

"क्योंकि मुझे अभी अन्य लोगों की भी मदद करनी है."

फिर परी उड़ गई.

जल्द ही वो दुनिया में सभी लोगों के लिए आशा लेकर आई.

और उसने पैंडोरा और एपिमिथियस से अपना वादा निभाया.

जब उन्हें उसकी जरूरत पड़ती तब उम्मीद हमेशा लौटती थी.

कभी-कभी बुरी चीजें होती हैं.

लेकिन हम उम्मीद करते है कि चीजें बेहतर होंगी.

हम हमेशा चीजों के अच्छे होने की उम्मीद करते हैं.

आपको क्या लगता है?